रिकॉर्डः–तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो... ओमशांति प्रातःक्लास 16/1/67
ऊँच ते ऊँच भगवान की ऊँच ते ऊँच महिमा भी की है और फिर उनकी ग्लानि भी की है। अब ऊँच ते ऊँच बाप आकर खुद अपना परिचय देते हैं और फिर जब रावण राज्य शुरू होता है तो वो फिर अपनी ऊँचाई दिखाता है भक्तिमार्ग की। भक्ति ही भक्ति है। राज्य ही उनका है। इसलिए कहा जाता है रावणराज्य। राम और रावण की भेंट की जाती है। बाकी वो राम तो त्रेता का राजा हुआ ना। उनके लिए नहीं कहा जाता है। रावण है आधा कल्प का राजा। ऐसे नहीं कि राम आधा कल्प का राजा है। नहीं, यह डिटेल में समझने की बहुत बातें हैं। यह तो बिल्कुल सहज बात है समझने की। हम सब भाई–2 हैं। हम सबका बाप वो एक निराकार है। बाप को मालूम है इस समय हमारे सब बच्चे रावण की जेल में हैं। काम चिक्षा पर बैठ सब काले हो गये हैं। यह बाप जानते हैं। आत्मा में ही सारी नॉलेज है ना। इसमें भी सबसे जास्ती महत्व है दुनियां में आत्मा और परमात्मा का। इतनी छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट नूंधा हुआ है जो कि बजाती रहती है। देहअभिमान में आकर पार्ट बजाती है तो स्वधर्म को भूल जाती है। अभी बाप आकर आत्मअभिमानी बनाते हैं; क्योंकि आत्मा ही कहती है कि हम पावन बनें। तो बाप कहते हैं माम् एकम् याद करो। आत्मा पुकारती है– हे परमपिता परमात्मा, पतित–पावन, हम आत्मायें पतित बन गई हैं। संस्कार तो सब आत्मा में हैं ना। आत्मा सिर्फ कहती है हम पतित बनी हैं। पतित कहा जाता है जो विकार में जाते हैं। पतित मनुष्य पावन निर्विकारी देवताओं के आगे जाकर उनकी महिमा गाते हैं। बाप समझाते हैं तुम ही पूज्य देवता थे। फिर 84 जन्म लेते–2 नीचे ज़रूर उतरना पड़े। यह खुद ही पतित से पावन, पावन से पतित होते कैसे हैं, सारा ज्ञान बाप आकर इस शरीर से समझाते हैं। अभी सबका अंतिम जन्म है। सबको हिसाब–किताब चुक्तू कर जाना है। बाबा सा० सब करवा देते हैं। पतित को अपने विकर्मों के दण्ड जरूर भोगने पड़ते हैं। पिछाड़ी का कोई जन्म देकर ही सजा देंगे। मनुष्य तन में ही सज़ा खावेंगे। इसलिए शरीर जरूर धारण करना पड़ता है। आत्मा फील करती है हम सज़ा भोग रही हैं। जैसे काशी कलवट खाते समय दण्ड भोगते हैं। पापों का सा० होता है। आत्मा को सज़ा फील होती होगी। आत्मा गर्भजेल में ही कितनी छोटी, इतनी छोटी आत्मा वहाँ भी फील करती है तब तो कहती है क्षमा करो। हम फिर ऐसे नहीं करेंगे। यह सब सा० होता है। सा० में ही क्षमा मांगते हैं। फील करते हैं। दुःख भोगते हैं। सबसे जास्ती महत्व है आत्मा और परमात्मा का। आत्मा कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाती है। तो आत्मा सबसे पावरफुल हुई ना। सारे ड्रामा में महत्व है आत्मा और परमात्मा का, जिसको और कोई भी नहीं जानते हैं। एक भी मनुष्य नहीं जानते हैं आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। सन्यासी भी यह नहीं जानते हैं। भल पवित्र बनते हैं, इसलिए उनके आगे जाकर नमन करते हैं। इन्हों से डरते भी हैं, कहीं इनको नाराज़ करने से भारत को कुछ हो नहीं जावे। यह साधु–सन्यासी तो हैं ही शंकराचार्य के वंश वाले। वो आते ही हैं रजोप्रधान समय में। वहाँ क्या करेंगे? यह तो देरी से आते हैं; परंतु वो लोग तो डर जाते हैं। ड्रामा अनुसार यह भी चलता है। तुम बच्चों को अभी ज्ञान है कि यह कोई नई बात नहीं है। कल्प पहले भी यह चला था। अपने गुण गाते रहते हैं। जगत गुरुओं को तो वास्तव में जगत को ज्ञान देना चाहिये, ना कि पॉलिटिकल बातों में पड़ना चाहिए। आजकल तो यह भी एम.पी. आदि बनने के लिए कोशिश करते रहते हैं। सन्त फतह सिंह महात्मा कहलाते हैं। आजकल वो भी वोटों में खड़े होने की कोशिश करते रहते हैं। वास्तव में उनका तो यह काम नहीं है ना। कहते भी हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग; परंतु अर्थ नहीं समझते हैं। बाबा ने तो इन साधुओं आदि का संग बहुत किया हुआ है। सिर्फ नाम ले लेते हैं। अभी तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो कि अभी हम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाते हैं। वो है नई दुनिया। वो है दिन। यह रात है। तो दिन में जाने लिए रात (पुरानी दुनिया) से वैराग किया जाता है। रात में है रावणराज्य। वो तो अब खतम हो जाना है। उससे क्या अब दिल लगानी है। बाप कहते हैं कोई भी देहधारी से दिल नहीं लगानी है। आत्मा कहती है कि एक बाप को

.....बनना है। भक्त भगवान को ही याद करते हैं कि हे भगवान हमको आकर सुख–शांति का वर्सा दो। भक्ति में तो दुःख है ना। सब झूठ ही झूठ बोलते हैं। यह तो बाप की ग्लानि ही है। भक्तिमार्ग में तो कुर्बान जाते हैं। बलि चढ़ते हैं। शंकर पर भी बलि चढ़ते हैं। यहाँ बलि चढ़ने की तो कोई बात ही नहीं है। हम तो जीते जी मरते हैं। बलि चढ़ गये माना मर गये। यह है जीते जी बलि। जीते जी मर कर बाप का बना है; क्योंकि उनसे वर्सा लेना है। उनकी मत पर चलना है। जीते जी बलि चढ़ना, वारी जाना वास्तव में अभी की बात है। भक्तिमार्ग में वो फिर कितनी जीवघात आदि करते हैं। यहाँ जीवघात की बात ही नहीं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। बाप से ही योग लगाओ। देहअभिमान में मत आओ। उठते–बैठते बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। 100% पास तो कोई हो नहीं सकते हैं।....भूलें करते रहते हैं। सावधानी नहीं मिलेगी तो भूलें छोड़ेंगे कैसे? माया किसी को भी छोड़ती नहीं है। खुद की कहते हैं बाबा, हम माया से हार खा लेते हैं। पुरुषार्थ करते भी हैं फिर भी पता नहीं क्या हो जाता है। हमसे इतनी बड़ी भूल पता नहीं कैसे हो जाती है। समझते भी हैं कि इससे हमारा नाम बदनाम होगा ब्राह्मण कुल में। फिर भी माया का ऐसे वार होता है जो समझ में ही नहीं आता है। देहअभिमान में आने से जैसे कि बेसमझ बन जाते हैं। बेसमझी का काम होता है तो फिर ग्लानि भी होती है। वर्सा भी कम हो जाता है। ऐसे बहुत भूलें करते हैं। देखो, मथुरा के सैन्टर का नारायण कुमार ब्रह्मचारी था। फिर माया ने ऐसे वार से थप्पड़ लगाया जैसे कोई गुस्से में आकर कोई को पादर(पत्थर) मारने लग पड़ते हैं। माया भी ऐसे ही चोट ऐसी मारती है जो बस। तो एकदम फंस मरा। सैन्टर चलाते थे, बहुतों को कहते थे काम महाशत्रु है और खुद काम के वश होकर काला मुँह कर दिया है। अब पछताते हैं। अब तो फिर से बहुत ही मेहनत करनी पड़ेगी। अपना भी नुकसान, दूसरे का भी नुकसान किया। अच्छा, अब फिर स्मृति में आता है कि बाबा, भूल हो गई। कितना (घाटा) हो गया। अब बाप तो कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। राहू का ग्रहण बैठता है तो फिर वो टाइम लेता है। चाढ़ी चढ़कर फिर उतरना मुश्किल होता है। मनुष्य को शराब की आदत पड़ती है तो फिर वो छुड़ाने में कितनी मुश्किलात लगती है। सबसे जास्ती है काला मुंह करना। यह छोड़ना बड़ा मुश्किल होता है। घड़ी–2 शरीर याद आता है। फिर बच्चा पैदा हुआ तो और ही याद बढ़ेगी। हम तो अब सबको भूलने की कोशिश कर एक को याद करते हैं। वो फिर याद के लिए पैदाइश करते रहते हैं। तो सब कहेंगे ना कि यह क्या हमको ज्ञान देंगे। उनका कोई सुनेगा नहीं। ऐसे–2 भी इत्तफाक होते हैं ना। इससे सम्भाल बहुत करनी पड़ती है। माया बड़ी तीखी है। सारा दिन शिवबाबा को याद करने का ही खयाल रहना चाहिए। अब नाटक पूरा होता है। हमको जाना है। यह शरीर भी खतम हो जाना है। जितना बाप को याद करेंगे तो देहअभिमान छूट जावेगा। और कोई की याद होगी तो वो वैर जरूर लेंगे। कितनी बड़ी मंजिल है। सिवाय एक बाप के और कोई के साथ दिल नहीं लगानी है। नहीं तो वो ज़रूर सामने आवेगा। वैर जरूर लेंगे। बहुत ऊँची मंजिल है। कहना तो बड़ा सहज है। लाखों में कोऊ माला का दाना निकलता है। कोई–2 को स्कॉलरशिप भी मिलती है ना दो–तीन वर्ष के लिए। जो अच्छी मेहनत करेंगे, जरूर स्कॉलरशिप लेंगे। समझा जाता है कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है वो ही करेंगे। साक्षी होकर देखना है मैं कैसी सर्विस करता हूँ। बहुत बच्चे चाहते हैं जिस्मानी सर्विस छोड़ इसमें ही लग जावें; परंतु बाबा सरकमस्टांस भी देखते हैं। अकेला है, कोई बंधन नहीं है तो हर्जा नहीं है। फिर भी कहते हैं नौकरी भी करो और यह धंधा भी करो। नौकरी में भी बहुतों साथ मुलाकात होगी। कोई का बंधन है, कोई का ना भी है। तो बाप समझाते हैं जितना हो सके सर्विस तरफ ध्यान देते रहो। अच्छा, एक मास (पधार) नहीं मिलेगा। सर्विस में लग जाते हैं। इस सर्विस से तो बहुत बड़ी आमदनी होगी। रिफ्रेश होकर जावेंगे। बाप समझाते हैं तुम बच्चों को ज्ञान तो बहुत मिला हुआ है। बच्चों द्वारा भी बाप बहुत ही सर्विस करते रहते हैं। प्रदर्शनी में भी कोई में प्रवेश कर सर्विस करता हूँ। सर्विस तो करनी ही है। .....

नींद कैसे करें? शिवबाबा तो है ही जागती ज्योत। सदैव जागने वाला। हमारी आत्मा थककर सो जाती है। थकता शरीर है। फिर आत्मा भी क्या करे? शरीर काम नहीं देता है। बाप तो अथक है ना। वो है ही जागती ज्योत। सारी दुनिया को जगाते हैं। उनका पार्ट ही वंडरफुल है जिसको तुम बच्चों में भी यथार्थ थोड़े जानते हैं। कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नहीं मानेंगे तो धर्मराज से दण्ड खावेंगे। फिर भी देहअभिमान में आकर आज्ञा का बहुत उल्लंघन करते हैं। बाबा डायरैक्शन देते हैं कब भी जिज्ञासुओं आदि से सर्विस ना लो। यह कायदा है। तुम खुद सर्वेंट हो। सर्विस से यहाँ सुख लेंगे तो वहाँ का सुख कम हो जावेगा। फिर भी छोड़ते नहीं हैं। आदत पड़ जाती है तो सर्वेंट बिना रह नहीं सकते हैं। इन्डिपेंडेंट रहेंगे तब सर्वेंट भी रख सकेंगे। इसलिए कहते हैं कि हम तो इन्डिपेंडेंट रहेंगे। कोई सम्भालने वाला ना हो; परंतु बाप कहते हैं इन्डिपेंडेंट रहना अच्छा है। तुम सब बाप पर डिपेंड करते हो। इन्डिपेंडेंट बनने से गिर पड़ते हैं। तुम सब डिपेंड करते हो शिवबाबा पर। सारी दुनियां डिपेंड करती है, तब तो कहते हैं– हे पतित–पावन, आओ। उनसे ही सुख–शांति मिलती है; परंतु समझते नहीं हैं। यह भक्तिमार्ग का समय भी पास करना ही है। जब रात पूरी हो तब तो बाप भी आवें। एक सेकेंड का भी फर्क नहीं पड़ सकता है। बाप कहते हैं मैं इस ड्रामा को जानने वाला हूँ। ड्रामा की आदि, मध्य, अंत को कोई भी नहीं जान सकते हैं। सतयुग से लेकर यह ज्ञान प्रायःलोप है। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। बाकी वो तो है भक्ति। तुम रचता को और रचना की आदि,मध्य,अंत को जानते हो। ऋषि–मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते हैं। तो नास्तिक ठहरे। ना जानने कारण गिरते ही रहते हैं। सज़ा खाकर एकदम आयरन एज़ में घुस पड़े हैं। तब तो बाप आते हैं। बच्चे समझते हैं हम कुछ भी नहीं जानते हैं। अब जान गये हैं। बाप को नॉलेजफुल कहते हैं। हमको वो नॉलेज मिल रही है।बच्चों को नशा भी अच्छा होना चाहिए, जिनमें ज्ञान है। बाकी तो हैं ही भूक बसर। बसर खाया जाता है, बाकी भूक को फेंका जाता है। जो अच्छी सर्विस करते हैं उनको बसर कहेंगे, बाकियों को भूक कहेंगे। भूक अर्थात् दास–दासियाँ। नौकर–चाकर बनेंगे। यह तो समझते हैं ना कि ज्ञान नहीं है तो भूक ही भूक है। राजधानी स्थापन होती है। कोई तो प्रजा में भी साधारण नौकर–चाकर बनेंगे। ज़रा भी ज्ञान समझ में नहीं आता है। वण्डर है ना। ज्ञान है तो बहुत आसान। 84जन्मों का चक्र अब पूरा हुआ है। अब जाना है घर। हम ड्रामा के मुख्य एक्टर्स हैं। सारे ड्रामा को जान गये हैं। सारे ड्रामा के हीरो–हीरोइन एक्टर्स हम हैं। कितना सहज है; परंतु तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी क्या करे। पढ़ाई में ऐसा होता है। कोई नापास हो जाते हैं। कितना बड़ा स्कूल है। राजधानी स्थापन होनी है। अब जितना जो पढ़ेंगे। बच्चे भी जान सकते हैं कि हम क्या पद पावेंगे। ढेर के ढेर हैं। सब वारिस तो नहीं बनेंगे। दिखाते हैं हम तो वारिस बन ना सकें। पवित्र बनना बड़ा मुश्किल है। बाप कितना सहज समझाते हैं। अब नाटक पूरा होता है। बाप की याद में सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनियां के मालिक बनना है। जितना हो सके याद में रहना है। तकदीर में ही नहीं तो फिर बाप के बदले और–2 को याद करते रहते हैं। दिल लगाने से फिर रोना भी बहुत पड़ेगा। बाप कहते हैं इस पुरानी दुनियां से दिल नहीं लगानी है। यह खतम होनी है। यह तो किसी को पता नहीं है ना। वो तो समझते हैं कलियुग अजुन काफी समय चलना है। घोर नींद में सोये पड़े हैं। तुम्हारा यह प्रदर्शनी सर्विस का विहंग मार्ग निकला है प्रजा बनाने का। राजा–रानी भी कोई निकल ही पड़ेंगे। बहुत ही हैं जो सर्विस का अच्छा ही शौक रखते हैं। फिर कोई गरीब, कोई फिर साहुकार हैं। औरों को आप समान बनाते हैं। इसका भी फायदा तो मिलता है ना। अंधों की लाठी बनना है। सिर्फ इतना बताना है कि बाप को और वर्से को याद करो। विनाश सामने खड़ा है। जितना विनाश का समय नजदीक आता जावेगा तो तुम्हारी सर्विस भी वृद्धि को पाती रहेगी। समझेंगे बरोबर ठीक है। तुम रड़ियां तो मारते ही रहते हो कि विनाश होने वाला है। (अच्छा जी, इसका बाकी हिस्सा फिर देखियेगा) ओम